शुभ
लाभ

Mahalaxmi Vrat Katha Hindi PDF | महालक्ष्मी व्रत कथा

प्राचीन समय की बात है, कि एक बार एक गांव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। वह ब्राह्मण नियमित रुप से श्री विष्णु का पूजन किया करता था। उसकी पूजा-भक्ति से प्रसन्न होकर उसे भगवान श्री विष्णु ने दर्शन दियेे. और ब्राह्मण से अपनी मनोकामना मांगने के लिये कहा, ब्राह्मण ने लक्ष्मी जी का निवास अपने घर में होने की इच्छा जाहिर की। यह सुनकर श्री विष्णु जी ने लक्ष्मी जी की प्राप्ति का मार्ग ब्राह्मण को बता दिया, मंदिर के सामने एक स्त्री आती है, जो यहां आकर उपले थापती है, तुम उसे अपने घर आने का आमंत्रण देना। वह स्त्री ही देवी लक्ष्मी है।

देवी लक्ष्मी जी के तुम्हारे घर आने के बाद तुम्हारा घर धन और धान्य से भर जायेगा। यह कहकर श्री विष्णु जी चले गये। अगले दिन वह सुबह चार बजे ही वह मंदिर के सामने बैठ गया। लक्ष्मी जी उपले थापने के लिये आईं, तो ब्राह्मण ने उनसे अपने घर आने का निवेदन किया। ब्राह्मण की बात सुनकर लक्ष्मी जी समझ गई, कि यह सब विष्णु जी के कहने से हुआ है. लक्ष्मी जी ने ब्राह्मण से कहा की तुम महालक्ष्मी व्रत करो, 16 दिनों तक व्रत करने और सोलहवें दिन रात्रि को चन्द्रमा को अर्ध्य देने से तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा।

ब्राह्मण ने देवी के कहे अनुसार व्रत और पूजन किया और देवी को उत्तर दिशा की ओर मुंह् करके पुकारा, लक्ष्मी जी ने अपना वचन पूरा किया। उस दिन से यह व्रत इस दिन, उपरोक्त विधि से पूरी श्रद्वा से किया जाता है।

Mahalaxmi Vrat Pooja Vidhi | महालक्ष्मी व्रत पूजा विधि

16 दिनों तक रखे जाने वाले इस व्रत में प्रत्येक दिन 16 अंजलि कुल्ले करके प्रातः स्नान आदि नित्य कर्म करना चाहिए। इसके बाद माता लक्ष्मी की प्रतिमा या मूर्ति की स्थापना की तैयारी करें। माता लक्ष्मी की मूर्ति की स्थापना के बाद उसके समीप 16 सूत्र के डोरे में 16 गांठ लगाएं। फिर उनका 'लक्ष्म्यै नमः' मंत्र से एक गांठ का और माता लक्ष्मी का विधि विधान से पूजन करें। पूजन सामग्री में चन्दन, पत्र, पुष्प माला, अक्षत, दूर्वा, लाल सूत, सुपारी, नारियल, इत्यादि चीजों का प्रयोग करें और प्रसाद स्वरूप फल मिठाई रखें। पूजा के पश्चात पूजा किए गए डोरे को दाहिने हाथ पर बांधते समय इस मंत्र का जाप करें-
धनंधान्यं धरां हर्म्यं कीर्तिमायुर्यश: श्रियम्।
तुरगान् दन्तिन: पुत्रान् महालक्ष्मि प्रयच्छ मे।।

व्रत वाले दिन सुबह पूजा करने के बाद शाम के समय भी मां लक्ष्मी की इसी विधि से पूजा करें। इन दिनों में एक दीपक मां लक्ष्मी के आगमन के लिए अपने घर के बाहर जलाएं। इसके बाद चंद्रमा को अर्ध्य भी अवश्य दें।

Mahalaxmi Vrat Mahatv

महालक्ष्मी व्रत में धन और वैभव की देवी लक्ष्मी जी की पूजा होती है। महालक्ष्मी व्रत भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि से प्रारंभ होकर अश्विन मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक किया जाता है। सोलह दिनों तक रखे जाने वाले इस व्रत में शाम के समय चंद्रमा को अर्ध्य भी दिया जाता है। वैसे तो यह व्रत 16 दिनों तक किया जाता है। लेकिन अगर सोलह दिनों तक व्रत रख पाना संभव न हो तो इस व्रत को अपने सामर्थ्य के अनुसार कम दिनों तक भी रखा जा सकता है। बिना अन्न ग्रहण किये इस व्रत को रखा जाता है और सोलह दिनों का व्रत पूर्ण होने के बाद इसका विधि विधान उद्यापन कर दिया जाता है।

https://pdffile.co.in/